REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

पालनपुर के जैन स्थापत्य

डा.शंकर वि. पटेल
आसि.प्रोफसर, श्री आदर्श आर्टस कोलेज, दियोदर (गुजरात)

❊ सारांश :

सेंकडो वर्ष होने के बाद भी जैन धर्म के स्थापत्य मूल स्थिति में सचवा रहे है। सभी जैन धर्म के संबंध यादवाकाल में जन्मे हुए बावीस में तीर्थकर नेमिनाथ साथ है। सोलंकीकाल के गुजरात में अनेक सांस्कारिक-सामाजिक कारण से यह जैन धर्म बहोत प्रतिष्ठित हुआ था।

१. श्री पल्लवीआ पार्श्वनाथ का देरासर :

प्रहलादनदवने पालणपुर नगर बसाया उसके साथ 'प्रहलादनविहार' नाम का जिनालय बंधाया था। जिसमें उन्हों ने पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा करवाई थी। अभी का बडा देरासर प्राचीन प्रहलादन विहार का मूल स्थानक है जो अभी पल्लवीआ पार्श्वनाथ के नाम से जाना जाता है।

यह पल्लवीयाँ पार्श्वनाथ मंदिर का जिर्णोध्धार ई.स.१६९१ में हुआ था और उसकी प्रतिष्ठा मोहनगणिने की थी। श्री पल्लवीआ पार्श्वनाथ देरासर के खोदकाम दौरान जैन मूर्तियाँ और सप्रमातृकाओं का पट मीला है।

पल्लवीआ पार्श्वनाथ देरासर तीन मजले का विशाल और भव्य था। मूलनायक श्री पल्लवीआ पार्श्वनाथ की आरस की मूर्ति देढ फ्ट उँची ह। भमती में श्रीगोडी पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। माल उपर श्री शांतिनाथ भगवान और शीतलनाथ भगवान की प्राचीन मूर्तियाँ है। मूर्ति के उपर के लेख से यह देरासर की प्राचीनता का ख्याल आता है।

कमालपुरा में दो देरासर है। उसमें से एक आदिश्वर भगवान का देरासर और मजले के उपर श्री पार्श्वनाथ भगवान प्रतिष्ठित है। दूसरे देरासर में श्री संभवनाथ भगवान है। यह देरासर भी शिखरबंधी है और विशाल है। यह दोनो देरासर एक-दूसरे के नजदीक आये हुए है।

२. श्री हीरविजयसूरीजी के जन्म स्थल :

मध्यकालीन गुजरात साहित्य के इतिहास में मुनिश्री श्री हीरविजयसूरीजी का स्थान अत्यंत महत्व का गीनाता है। आखिरि ४०० साल के इतिहास में श्री हीरविजयसूरीजी महाराज के बारे में फागु काव्यो, सज्जयो, रासाओ, स्तवनो, स्तुतिओ जैसी अगण्य कृतिओं की रचनाएँ हुई है। उनके बारे में जितना साहित्य रचाया है उतना साहित्य तो शायद दूसरा कोइ जैन आचार्य के बारे में रचाया नहिं हो, विविधगच्छीत समकालीन और अनुकालीन मुनिओ द्वारा रचाया हुआ हीरीविजयसुरी के गुण गाते असंख्य साहित्यिक रचनाएँ उपरांत उनकी मुर्तियाँ तथा पादुकाओ की स्थापना गुजरात और राजस्थान के अनेक छोटे बडे गामो में हुई इतना तो चोक्कस कह शकते है कि, आखिरि ४५० वर्षो में हुआ जैन आचार्य भगवंतो में वह शिरमोर आचार्य थे।

जैन धर्म के यह तेजस्वी आचार्यश्री हीरविजयसूरिजी का जन्म वि.सं.१५८३ मागसर सुद-९ सोमवार के दिन पालनपुर नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम 'कुराशाह' और माता का नाम 'नाथीबाइ' था। बचपन में उनका नाम 'हीरकुमार' रखा था। उनका जन्म अतिधनवान कुटुंब में होने के कारण, दोनो बडी बहनें 'विमला' और 'राणी' तथा छोटा भाइ 'श्रीपाद' के साथ बहोत लाडकोड से उनका उछेर हुआ था। बचपन से ही हीरकुमार अत्यंत स्वरुपवान तो थे ही, लेकिन ज्योतिशास्त्र की दृष्टि से भी अति शुभ गीनते ३२ जीतने चिन्ह उनके हाथ पाँव के तलिये में थे। वह अतिशय वाक्चातुर्य होने की वजह से बचपन से ही उन्होंने बुद्धिशाली पुरुषों के हृदय में स्थान प्राप्त कर लीया था। यह बाल हीरकुमार को पिताजीने भव्य महोत्सवपूर्वक न्याय-व्याकरण आदि शैवशास्त्र का निष्णात ऐसे पंडितजी के पास अध्ययन के लिए रखा था। गुरुजीने हीरकुमार को लेखन-गणित से शुरु करके शकुन-स्वरशास्त्र तक की पुरुष की ७२ कलाएँ शीखाई थी। इसके बदले में उनके पिताजी ने उनके गुरु को गुरुदक्षिणा के रुप में पुष्कल धन अर्पण किया था।

बचपन में ही विद्याभ्यास के दौरान माता-पिता की मृत्यु हो गई परिणाम स्वरुप, उनकी दोनो बडी बहनें उनको अपने घर पाटण ले गई। जैन धर्म का एक महत्व का केन्द्र पाटण नगर में एक बार यह हीरकुमार आचार्यश्री विजयसेनसूरि का व्याख्यान सुनने गये थे। उनके उपदेश में से संसार की असारता के बारे में जानकर उनके मन में भी संसारमुक्ति की इच्छा जागी और अपनी दोनो बहनें, छोटाभाइ तथा स्वजनो की समजावट फिर भी वह

अपनी दीक्षाग्रहण के निर्णय में अडग रहे। आखिर, स्वजनो की संमति से वि.सं.१९५६ में कारतक वद-२ सोमवार के दिन पाटण में आचार्य विजयसेनसूरिकी निश्रा में दीक्षाग्रहण की और जैन इतिहास में वह ''हीरहर्षमुनि'' के नाम से जाने गये।

३. सरोत्रा और भीलडी के जैन देरासर :

पालणपुर से ११ माइल के अंतर पर वायव्य दिशा में सरोत्रा नाम का प्राचीन गाम है। यह गाम में शांतिनाथ भगवान के लगभग १८ सैके में बंधाया हुआ देरासर आया हुआ है। यह देरासर में पाषाण की २ और धातु की १ मूर्ति है। गाम के पूर्व तरफ के प्रवेशद्वार पर आया हुआ चोक बीच में भगवान की मूर्तिवाला बडा पथ्थर जमीन में खडा किया था। उसके पास एक प्राचीन मंदिर खंडेर बन के पडा था। मंदिर के मंडोवर थंभे और पीठ के गोखले में और दरवाजे के पास में की हुई असंख्य मूर्तियों की शिल्पकला देखकर लगता है कि आबु के देरासरो का अनुकरण किया होगा। खंडित भागो पर से लगता है कि यह देरासर मूल गभारो, गूंढ मंडप, छ चोकी, सभामंडप, चारो तरफ फिरती शिखरबंधी की रचनावाला होगा। अभी मूल गाभारो, शिखर, सभामंडप और दो चार देरीयाँ छोडकर बाकी सभी देरीयाँ गीर गई है। जबकि गूढ मंडप, छ-चोकी शृंगार चोकी और दो चार देरीयों पर वि.सं.१६८९ के लेख है। उसमें भट्टार्क श्री विजयदेवसूरी और भट्टारकश्री विजयसूरीने नमस्कार करने का उल्लेख है। वि.सं.१६९३ की साल का एक लेख भी यहीं से मीलता है।

१८ मे सैके के यात्री पं.महिमा अपनी तीर्थ माला में यहाँ दो मंदिर थे। उसमें कुल २१८ बिंब होने का अनुमान किया है। भीलडी में आया हुआ जैन देरासर में घूसते ही पहले भोंयरे में श्री नेमिनाथ भगवान की रमणीय प्रतिमा बिराजमान है। दायी ओर पर श्री आदिनाथ प्रभु और बायी ओर पर पाषण की चोवीसी है। यह चोवीसी के बीच में भारवटीया के नीचे श्री पार्श्वनाथ भगवान की छोटी मूर्ति है।

उपर के भाग में श्री महावीर प्रभु बिराजमान है। यह मूर्ति के साथ दूसरी तीन मूर्तियाँ मूल गभारा में बिराजमान है। जो वि.सं.१८९२ में हए नवीन जिर्णोद्धार समय पर प्रतिष्ठित किया है। मूल गभारा में शांतिनाथ भगवान की मूर्तियाँ है। वे यहाँ धर्मशाला बनाते समय पाये में से नीकली थी। उसके उपर १५मी सदी का लेख है।

प्रदक्षिणा में फिरती ३१ डेरीओमें तीर्थकर की मूर्तियाँ है। जबकि एक में चकेश्वरी देवी की मूर्ति और दूसरी अंबिका देवी की मूर्ति है।

४. दांतीवाडा और रामसण के जैन देरासर :

पालणपुर से ३० किलोमीटर दूर आया हुआ दांतीवाडा में आदिश्वर भगवान का देरासर है। वह विक्रम की ११ मी सदी में बना हो ऐसा जानने को मिलता है। विजयसोमसूरिने यह मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई है। रंगमंडप में दायी तरफ से पद्मप्रभु भगवान की दो हाथ उंची अति महोनर मूर्ति स्थापन की है।

यहाँ का उपाश्रय जो वि.सं.१८९७ में बना है उसके एक गोखले में एक हाथ खडी महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित की है।

डीसा से लगभग १२ कि.मी. दूर रामसण नामक प्राचीन तीर्थ आया है। यहाँ गाम में नदी किनारे एक प्राचीन मंदिर खडा है। कुछ सालो पहले उसका जिर्णोद्धार हुआ है। मंदिर के भोंयरे में ऋषभदेव की ३ फ्ट उंची सुंदर चार मूर्तियाँ बिराजमान है।

५. जैन दादावाडी :

गठामण दरवाजे के पास जगाणा गाँव में जाने के रास्ते पर दादावाडी नामक जैन स्थान आया है। जिसमें दादासाहब जिनदत्तसुरी का पगलां है। वह पालणपुर के भणीशाली ज्ञाति का जैनो का आदरपात्र सूरि है।

६. मणिभद्रवीर महाराज :

यह मंदिर पालनपुर के नजदीक के विस्तार में होकर १८ कि.मी. और छापी हाइवे से १० कि.मी. के अंतर पर आया है।

ये स्थल पर हर माह सुद पंचम के दिन हजारो श्रध्धालु दर्शनार्थे आते है। आसो माह के पाँचवे नवरात्रि पर यज्ञ होता है। तब पशुपालक वर्ष दौरान अपने परिवार व्यवसाय एवम ढोरढांखर की सलामती और वृध्ध के लिए मिन्नते मानी हो वह मिन्नतो में धी चढाने के साथ लाते है। यहा बडा मेला लगता है। रात को नायक लोको वीर की जातर (भवाइवेश) रमते है और चोमासे में बंध रखा हुआ भवाइवेश का फिरसे यहीं से प्रारंभ करते है।

मोदी, सोनी, नायी आदि समाज के लोग अपने पुत्र की कंदोरा की मिन्नत यहाँ पूर्ण करते है। आंजणा समाज उपरांत अन्य बहोत से समाज के लोग उनके पहले पुत्र की बाबरी यहाँ उतारने आते है। मणिभद्रवीर का ऐसा प्रभाव है कि कोई भी गाम के कोइ भी ज्ञाति की जान मगरवाडा के सीममें से निकलती हो तो वह लोगो को वीर का खीचढा (विशिष्ट नैवेध) चढाना पडता है। लग्न बाद यह नैवेध चढाना पडता है।

सनातन धर्म के लोग सहित जैन भी दादा को सदाय जागृत दादा मानते है। वह भी दादा की भाव से भकित भी करते है।

७. श्री वासुपूज्य स्वामी जैन देरासर :

परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य भगवान कुमुदचंद्र सुरीश्वरजी महाराज साहब कालधर्म हुए तब उनके अग्नि संस्कार विधिवत यह स्थल पर किया और बहोत धामधूम से और आनंद उल्लास से उनका वरघोडा निकला था। यह मंदिर गठामण दरवाजे के पास में अंबिकानगर शेरी में आया है। इस मंदिर की कोतरणी भव्य है।

उनकी स्मृति में उसी जग्या पर नीचे की तरह में गौतम स्वामी हीरशुरेश्वरजी और कुमुदचंद्रजी का गुरुमंदिर और उपर के मजले पर श्री वासुपूज्य स्वामी आदि भगवानो की प्रतिष्ठा की है। इसीलिये उनको वासुपूज्य स्वामी जीनालय कहेलाते है।

इस जीनालय के पास में एक सिध्धाजलनी उपरांत तपस्वी सम्राट कुमुदचंद्र महाराज साहब के पास में रचना की है। यहीं पास में ही पाठशाला की भी रचना की है। इस महाराजा साहब की प्रतिमा स्थापना १७ वर्ष पहले की है। इस मंदिर की खास विशेषता यह है कि, अंदर की बारीक कोतरणी बहार के कारीगरों द्वारा की है और उपर के मजले पर ६ बारीयाँ अलग-अलग शिल्पकृति वाली है।

८. श्री शांतीनाथजी जैन नाना देरासर :

यह मंदिर नागणेची माताजी के मंदिर के पास में हनुमान शेरी में आया है। इस मंदिर के पास में नानासाहब महाराज की प्रतिमा की स्थापना की है। उसका संचालन ट्रस्टीगण करते थे। यह मंदिर ५० साल पूराना है। गठामण दरवाजे के अंदर ब्राह्मण वास में नगरकोट के पास यह जिनालय आया है। जो विक्रम की १४मी सदी का है। अभी का बाँधकाम देखकर लगता है कि, पिछे से उसका जिर्णोध्धार हुआ होगा।

पार्श्वनाथ और शांतिनाथ देरासरो की भव्यता से यहां के जैनो की समृद्धियाँ का ख्याल आता है।

९. मुलनायक श्री शीतलनाथ भगवान :

यह गंगाविहार धाम पालनपुर के नजदीक बादरपुरा पर आया है। इस मंदिर की स्थापना अल्लाउद्दीन खिलजी के समय दौरान खंडित की हुई मुर्ति के टूकडे मीलने पर की है। यह मूर्ति प्राचीन यानि की २१०० वर्ष पूर्व की है। यह प्रतिमा बाबुलाल पारसमल हजारीमल द्वारा पालनपुर नजदीक बादलपुरा हाइवे पर है। इस गृहमंदिर की स्थापना २००८ वर्ष दरम्यान की है। बोहरा गाम साचौर और हाल में मुंबइमां रहते है उनके शीतलनाथ के अवशेष मीलने पर पालनपुर उनकी प्रतिष्ठा की है। मूल यह प्रतिष्ठा स्थापक रत्नागर महाराज साहब के हाथो से की है।

१०. संप्रति कालिनश्री महावीर स्वामी भगवान (चडोतर) :

परमतारक चौवीस में तीर्थधिपतिश्री महावीर भगवान की शांत, सुंदर, श्वेतवर्ण संगेमरमर की पदमासनन्ध ४० की प्रतिमाजी बिराजमान थे। जैनाचाया के निधान मुताबिक यह प्रतिमाजी बहोत प्राचीन है। यहाँ मिलते प्राचीन अवशेषो पर से यह स्थल एक प्राचीन और भव्य तीर्थ होगा ऐसा लगता है। सालो पहले जमीन में खोदकाम करते वक्त भगवान महावीर की तेजोमय किरणो की जय देदिप्यमान मूर्ति मीली है। चडोतर गाम में से इस तरीके से कदरती भव्य प्रतिभाजी प्राप्त हुए। यह मूर्ति संपत्ति महाराज के समयकाल की थी। प्रतिमाजी पर के लखाण से भी उसकी प्राचीनता की प्रतिति हुए बगेर रहती नथी। श्री भगवान महावीर स्वामी की यह अलौकिक और चमत्कारीक प्रतिमा के दर्शन मार्ग से जीवन में आनंद की लहेर प्रसरी है। इस प्रभावशाली प्रतिमा की पौराणिका के ध्यान में लेकर जापान, मुंबइ जहाँ स्थलो के जीनालयोमें से बारबार विनंतीयाँ आती थी लेकिन अपने उत्कृष्ट पून्योध्य यह लाभ अपने ही चडोतर गाम में अपने जीनालय में प्रभुजी स्थापन कर हम धन्यता अनुभवते है। उसका हम को गर्व है लेकिन यह जीनालयो को उत्कृष्ट कोतरकाम कीया है। यह स्थल राज्य (हाइवे डीसा) हाइवे पर आया है। पालनपुर से ५ कि.मी. के अतर नजदीक की सीमा पर है। जैन तो शुश्रध्धालु जैनोत्तर गाम-गाम से यहाँ दर्शन कर के धन्य होते है। लीली हरियाली से लहराता खेतरो के बीच कुदरत के सानिध्य में चडोतर नगर की पावन भूमि पर देवविमान तूल्य जीनप्रसाद उपाश्रय, धर्मशाला, आराधना भुवन, भोजनशाला आदि का निर्माण कर के तीर्थ निर्माण हुआ है। श्रावक धर्म के कर्तव्यों में से उत्कृष्ट प्राप्त करने का सौभाग्य श्रीमती प्रभाबेन रतिलाल चंदुलाल शाह परिवार को प्राप्त हुआ है।

✻ संदर्भसूचि :

१. शेठ कल्याणजी आनंदजी, जैनतीर्थ सर्वसंग्रह
२. रावल यशवंत ज., ''पातालनगर पालनपुर'', वर्ष : २००४
३. पटेल (डॉ.) दिपकभाई एम., ''पालनपुर राज्य का इतिहास'' (इ.स.१६३५ से १९४८) प्रकाशक : दामिनी पब्लिकेशन, अहमदाबाद, इ.स.२०१३
४. Gazetter of India, Gujarat Op-Cit.
५. Administrative Report of the Palanpur state, A.D. 1943-44
६. अपना जिल्ला बनासकांठा, प्रकाशक : जिल्ला शिक्षण और तालीम भवन, पालनपुर, इ.स.२०१२

डॉ.शंकर वि. पटेल
आसि.प्रोफसर, श्री आदर्श आर्टस कोलेज, दियोदर (गुजरात)